आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 11-08-14

विकारी मनुष्यों को श्रेष्ठ कर्म सिखलाकर, निर्विकारी देवी-देवता बनाने वाले, परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने कहा, मीठे बच्चे - अब विकर्म करना बन्द करो क्योंकि अब तुम्हें विकर्माजीत बन कर, विकर्माजीत संवत (सतयुग) शुरू करना है.

बाबा ने हम बच्चों को श्रेष्ठ-कर्म, अकर्म और विकर्म कि गुह्य गति के बारे में पूरा ज्ञान दिया हैं.

हम आत्माये सतयुग से त्रेता के अन्त तक जो भी कर्म करते है वह अकर्म है, क्योंकि सतयुग-त्रेता में चलने वाला पार्ट, हमारे अभी कीये हुए श्रेष्ठ कर्मों का प्रालब्ध है. दूसरा वहॉ आत्माये, आत्म-अभिमानी रहकर पार्ट बजाती है और तीसरा वहॉ माया-रावण होती ही नहीं इस लिए वहॉ के कर्म सब अकर्म होते है जिसका कोई भी खाता नहीं बनता.

द्वापर से माया-रावण का राज्य चालू होता है. तो द्वापर से कलियुग अन्त तक, हम आत्माये देह-अभिमान में रहकर पार्ट बजाते है तो इस दौरान जो भी कर्म करते है वह सब विकर्म हो जाते है. क्योंकि यह कर्मों का खाता बनता है, भले फिर आत्माये दान-पुण्य करें तो भी उसको भी चुकतु करना पड़ता है.

जब कलियुग के अन्त में शिवबाबा, ब्रह्मा के तन में आते है तो संगमपुग चालू होता हैं. बाबा आकर हमें अकर्म, विकर्म और श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान देते हैं. इस अमूल्य संगमयुग के समय का हमारा हर कर्म श्रेष्ठ कर्म हो इस लिए हमें दो बातों कि धारणा अवश्य करनी चाहिए.

1. हर समय बाबा के साथ का श्रेष्ठ संग हो. हम सब जानते है कि यह बात जितनी सरल कहने में लगती है उतनी सरल है नहीं. हर समय, श्वास और संकल्प बाबा की याद में समाई रहने वाली आत्मा ही कह सकती है की बाबा का श्रेष्ठ संग सदा साथ हैं. बाबा की याद में रहकर हम कोई भी अच्छा सेवा का कर्म करते है तो वह श्रेष्ठ कर्म बन जाता हैं, जो हमारा सतयुग-त्रेता में ऊँच भाग्य बनाता हैं.

एक बाप कि याद हमारे में समा जाये उसके लिए नीचे दी हुई ड्रिल हमें जब समय मिले करनी है.

सिमरन करें -- बाबा मेरे साथ है, बाबा मेरे पास है.

फील करें -

बाबा मेरे साथ है यानी अभी बाबा मेरे साथ चल रहे है, में जो भी संकल्प - कर्म करता हूँ उसमें बाबा मेरे साथ है.

बाबा मेरे पास है यानी परमधाम में बाबा मेरे पास हैं.

एक सेकेण्ड यहॉ बाबा के साथ का अनुभव करें, दूसरी सेकेण्ड परमधाम में, बिजरूप अवस्था में बाबा के पास का अनुभव करें. दिन भर में इसकी प्रैक्टिस बार-बार करें.

2. स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहने की. जभी हमें बाबा कि याद भूल जाती है तो उस समय हम जो भी कर्म करते है वह सब विकर्म ही होते है, क्योंकि रावण राज्य है ना. अगर हमारे से कोई भी बड़ा विकर्म हो जाता है और उसे हम बाप से छिपाते है तो वह विकर्म कि सो गुना सजा खानी पड़ती है इस लिए संकल्प में भी कोई कि ईर्षा, निंदा या किसी प्रकार से अन्य आत्मा को दुख देने का विचार न आये और अगर आता है तो उसे बाप को सही-सही बता दे तो बाबा जरूर उसका कोई निदान कर देगा.

जो भी आत्माये ऊपर की दो धारणाओं पर ऐक्युरेंट चलती है तो उस आत्मा के श्रेष्ठ कर्मों का खाता बढ़ता ही जाता है और उसके आधार पर वह सतयुग में ऊँच पद को प्राप्त करती हैं.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email:
a.brahmin.soul@gmail.com .